महीने के अंतिम वृहस्पतिवार: मन की बात मत्स्य किसानो के साथ "

On

Importance of Fish Health Management in Aquaculture

30th January 2025

The Aquatic Environment & Health Management Division (AEHMD), ICAR-Central Institute of Fisheries Education, Mumbai successfully organized the event " महीने के अंतिम वृहस्पतिवार: मन की बात मत्स्य किसानो के साथ " on 30th January 2025, focusing on the **Importance of Fish Health Management in Aquaculture**. A total of 69 participants including farmers from various states viz. Bihar, Maharashtra, West Bengal, Madhya Pradesh, Uttar Pradesh, Jharkhand, and Haryana, actively participated in the program virtually. The event aimed to educate farmers on health management of aquatic environment and stocked animals, best management practices, disease prevention, and adequate culture practices to ensure sustainable fish farming. Dr. Megha K. Bedekar, Head AEHMD in her inaugural address briefed about the program and the critical aspects of fish health management. The primary focuses of the discussion was the prevention and treatment of diseases in aquaculture. The experts provided valuable insights on the questions flagged before the panellists. The discussion covered common fish diseases caused by bacteria, viruses, parasites, and fungi, methods for early disease detection and prevention, the significance of maintaining water quality to prevent disease outbreaks, use of herbal and organic treatments to cure infected crops, and antibiotic stewardship to prevent antimicrobial resistance. These strategies help in reducing fish mortality rates and ensure the sustainability of aquaculture operations. A team of renowned scientists from CIFE along with experts from various department and regional centres were present at the event to share their knowledge and answer farmers' queries. The panel included Dr. Megha K. Bedekar, Dr. Saurav Kumar, Dr. Arun Sharma, Dr. Saloni Shivam, Dr. Kundan Kumar, Dr. Babita Rani A.M., Dr. Prem Kumar, Dr. Md. Aklakur, Dr. Shashi Bhushan, Dr. Sreedhan K., Dr. Sunil Kumar Nayak, Dr. Sikendra Kumar, Dr. Sangeeta Mandal, Dr. Ankush L. Kamble, Dr. Suman Manna, Dr. Sweta Pradhan, Dr. Muralidhar P. Ande, Dr. K. Syamala, Dr. Dhalong Saih Reang, Mr. Udipta Roy, Dr. Upasana Sahoo and Program Nodal officer Dr. Arpita Sharma, Head FEES Division. The experts provided in-depth explanations, clarified doubts and offered practical solutions tailored to the farmers' needs. The interactive session enabled farmers to gain knowledge and understand how to implement the recommended practices effectively. The event concluded on a positive note from the attendees. The farmers appreciated the insights shared by the experts and expressed satisfaction with the comprehensive answers provided to their queries. "Mann Ki Baat Matsya Kisan Ke Sath" proved to be a highly informative and successful initiative, contributing to the development of sustainable aquaculture practices among fish farmers. The program was organised under the guidance of Dr. Ravishankar C.N., Director

and Vice –Chancellor and Dr. N.P. Sahu Joint Director, ICAR-CIFE, Mumbai and coordinated by Dr. Arun Sharma, Dr. Saurav Kumar, and Dr. Saloni Shivam, from the Aquatic Environment and Health Management Division.

“जलकृषि में स्वास्थ्य प्रबंधन की महत्व”

३० जनवरी २०२५

जलीय पर्यावरण और स्वास्थ्य प्रबंधन प्रभाग (एईएचएमडी), आईसीएआर-सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ फिशरीज एजुकेशन, मुंबई ने **"महीने के अंतिम वृहस्पतिवार: मन की बात मत्स्य किसानो के साथ"** कार्यक्रम का सफलतापूर्वक आयोजन दिनांक 30 जनवरी 2025 को किया। कार्यक्रम **“जलकृषि में स्वास्थ्य प्रबंधन की महत्व** ” विषय पर केंद्रित था | कार्यक्रम में बिहार, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, झारखंड और हरियाणा राज्यों के किसानों सहित कुल 69 प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। इस आयोजन का उद्देश्य सतत मछली पालन सुनिश्चित करने के लिए जलीय पर्यावरण और भंडारित मछलियों के स्वास्थ्य प्रबंधन, सर्वोत्तम प्रबंधन प्रथाओं, बीमारी की रोकथाम और पर्याप्त खेती प्रथाओं पर किसानों को शिक्षित करना था। एईएचएमडी प्रमुख डॉ. मेघा के. बेडेकर ने अपने उद्घाटन भाषण में कार्यक्रम और मछली स्वास्थ्य प्रबंधन के महत्वपूर्ण पहलुओं के बारे में जानकारी दी। चर्चा का प्राथमिक केंद्र जलीय कृषि में बीमारियों की रोकथाम और उपचार था। विशेषज्ञों ने उनके समक्ष उठाए गए प्रश्नों पर बहुमूल्य सूचना प्रदान की। कार्यक्रम में बैक्टीरिया, वायरस, परजीवियों और कवक के कारण होने वाली आम मछली की बीमारियों, बीमारी का शीघ्र पता लगाने और रोकथाम के तरीके, बीमारी के प्रकोप को रोकने के लिए पानी की गुणवत्ता बनाए रखने का महत्व, संक्रमित फसलों को ठीक करने के लिए हर्बल और जैविक उपचार का उपयोग और रोगाणुरोधी प्रतिरोध को रोकने के लिए एंटीबायोटिक प्रबंधन पर चर्चा की गई। ये रणनीतियाँ मछली मृत्यु दर को कम करने में मदद करती हैं और जलीय कृषि कार्यों की स्थिरता सुनिश्चित करती हैं। विभिन्न विभागों और क्षेत्रीय केंद्रों के विशेषज्ञों के साथ सीआईएफई के प्रसिद्ध वैज्ञानिकों की एक टीम अपने ज्ञान को साझा करने और किसानों के प्रश्नों का उत्तर देने के लिए इस कार्यक्रम में उपस्थित थी। पैनल में डॉ. मेघा के. बेडेकर, डॉ. सौरव कुमार, डॉ. अरुण शर्मा, डॉ. सलोनी शिवम् , डॉ. कुंदन कुमार, डॉ. बबीता रानी ए.एम., डॉ. प्रेम कुमार, डॉ. मोहम्मद अकलाकुर, डॉ. शशि भूषण, डॉ. श्रीधरन के., डॉ. सुनील कुमार नायक, डॉ. सिकेंद्र कुमार, डॉ. संगीता मंडल, डॉ. अंकुश एल. कांबले, डॉ. सुमन मन्ना, डॉ. श्वेता प्रधान, डॉ. मुरलीधर पी. अंडे, डॉ. के. श्यामला, डॉ. धलोंग सैह रियांग, श्री उदिप्ता रॉय, डॉ. उपासना साहू और कार्यक्रम नोडल अधिकारी डॉ. अर्पिता शर्मा, प्रमुख फीस प्रभाग , शामिल थे। । विशेषज्ञों ने गहराई से स्पष्टीकरण दिया, शंकाओं का समाधान किया और किसानों की आवश्यकताओं के अनुरूप व्यावहारिक समाधान पेश किए। परस्पर सत्र में किसानों को ज्ञान प्राप्त करने और यह

समझने में सक्षम बनाया कि अनुशंसित प्रथाओं को प्रभावी ढंग से कैसे लागू किया जाए। कार्यक्रम उपस्थित लोगों के सकारात्मक रुख के साथ संपन्न हुआ। किसानों ने विशेषज्ञों द्वारा साझा की गई अंतर्दृष्टि की सराहना की और उनके प्रश्नों के दिए गए व्यापक उत्तरों पर संतुष्टि व्यक्त की। "मन की बात मत्स्य किसान के साथ" एक अत्यधिक जानकारीपूर्ण और सफल पहल साबित हुई, जिसने मछली किसानों के बीच स्थायी जलीय कृषि प्रथाओं के विकास में योगदान दिया। कार्यक्रम का आयोजन निदेशक एवं कुलपति डॉ. रविशंकर सी.एन. एवं डॉ. एन.पी. साहू , संयुक्त निदेशक, आईसीएआर-सीआईएफई, मुंबई के मार्गदर्शन में किया गया। कार्यक्रम जलीय पर्यावरण और स्वास्थ्य प्रबंधन प्रभाग से डॉ. अरुण शर्मा, डॉ. सौरव कुमार और डॉ. सलोनी शिवम द्वारा समन्वयित किया गया।